RJPP, Vol. 16, No. 2, 2018, ISSN (P) : 0976-3635, (e) :2454-3411 Impact Factor 6.476 (SJIF)
UGC Approved Journal No. 43279

स्वच्छ भारत अभियान के प्रेरणास्रोतः गांधी

डॉ0 अर्जुन मिश्रा
एसो. प्रो.,राजनीति विज्ञान विभाग, शिवपति पी0जी0 कालेज
शोहरतगढ़ सिद्धार्थनगर

सरांश

गांधी के 145 वें जन्म–दिन के अवसर पर स्वच्छ भारत अभियान का शुभारम्भ किया गया तथा उनके 150 वीं जयंती के अवसर पर देष को पूर्णतया स्वच्छ बनाने का संकल्प व्यक्त किया गया। 25 सितम्बर से 31 अक्टूबर तक स्वच्छ विद्यालय अभियान चलाया गया। इसमें केन्द्रीय विद्यालय तथा नवोदय विद्यालय संगठन के छात्र–छात्राओं ने भाग लिया।

गांधी आजादी की लड़ाई के साथ–साथ भारतीयों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करते रहे।उन्होंने अपने जीवन–चर्या में स्वच्छता को सर्वोच्च स्थान दिया। भारत आने के पूर्व दक्षिण अफ्रीका में भी भारतीयों में स्वच्छता की अलख जगाने का काम किया। गांधी अपने जीवन काल मे ही भारत को गुलामी की जंजीरो से मुक्त करा दिए परंतु स्वच्छता की इनकी लड़ाई अधूरी रही, इसे नरेद्र मोदी आगे बढ़ा रहे हैं। हम सभी को इस कार्य को करने में सहयोग करना चाहिए। यह गांधी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

मूल शब्द : *स्वच्छ भारत अभियान, स्वच्छता, शौचालय, दक्षिण अफ्रीका, ग्राम स्वराज्य, गांधी*

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ0 अर्जुन मिश्रा

स्वच्छ भारत अभियान के प्रेरणास्रोतः गांधी

RJPP 2018,
Vol. 16, No. 2, pp. 33-38
Article No. 5

Online available at *:*
http://anubooks.com/?page_id=2004

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 15 अगस्त 2014 को लाल किले के प्राचीर से गंदगी के खिलाफ लड़ने का आह्वाहन किया। 2 अक्टूबर 2014 को गांधी के 145 वें जन्म–दिन के अवसर पर स्वच्छ भारत अभियान का शुभारम्भ किया गया तथा उनके 150 वीं जयंती के अवसर पर देश को पूर्णतया स्वच्छ बनाने का संकल्प व्यक्त किया गया। प्रधानमंत्री ने राजघाट पर झाड़ू लगाया। मोदी द्वारा स्वच्छ भारत अभियान का शुभारम्भ से ऐसा लगा कि गांधी का सपना पूरा होने वाला है। शहरी तथा ग्रामीण दोनो क्षेत्रों के लिये स्वच्छ भारत अभियान चलाया गया। इस अभियान पर 1,96,091 करोड़ रूपया खर्च होगा। इसके लिये पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय 1 लाख करोड़ और केंद्रीय शहरी विकास मंत्रालय 62 हजार करोड़ रूपया की आर्थिक सहायता करेंगे। केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने क्लीन इण्डिया कैम्पेन के लिए प्रत्येक ग्राम पंचायत को सालाना 20 लाख रूपये देने की घोषणा की। प्रधानमंत्री ने इस अभियान के लिये 9 ख्याति प्राप्त लोगों अनिल अंबानी, सचिन तेन्दुलकर, सलमान खान, प्रियंका चोपड़ा, बाबा रामदेव, कमल हसन, मृदुला सिन्हा, शशि थरूर और शाजिया इल्मी को जोड़ा। ये लोग अन्य लोगों को जोड़ेंगे और धीरे–धीरे सभी भारतवासी इससे जुड़ेगे। प्रधानमंत्री ने लोगों से अपील की कि वे हर वर्श 100 घंटे यानी हर सप्ताह 2 घंटे श्रम–दान करें।

स्वच्छ भारत अभियान के पूर्व भी स्वच्छता के लिये प्रयास हुआ लेकिन इतने बड़े पैमाने पर नही हुआ। पूर्व में षौचालय बनवाने पर जोर था आज न केवल शौचालय बनवाने पर जोर है बल्कि यह प्रयास है कि जो शौचालय बने हैं उनका इस्तेमाल हो। आज पूरी सरकारी मशीनरी एक साथ कार्य कर रही है। व्यक्तिगत षौचालय बनाने के साथ–साथ सामुदायिक तथा सार्वजनिक शौचालय बनाये जा रहे हैं। व्यक्तिगत रूप से षौचालय बनवाने पर 12 हजार रूपया का अनुदान दिया जा रहा है। 2019 तक 8.84 करोड़ षौचालय बनाने का लक्ष्य रखा गया है। शुष्क शौचालयों तक जल पहुँचाया जा रहा है उन्हे बदला जा रहा है। जहां व्यक्तिगत शौचालय बनाने में कठिनाई हैं वहां सामुदायिक शौचालय बनाये जा रहे हैं। भीड़–भाड़ वाले स्थानों जैसे– बाजार, रेलवे–स्टेषन, बस–अड्डे, पर सार्वजनिक शौचालय बनायें जा रहे हैं।

स्वच्छ भारत अभियान के एक हिस्से के रूप में 25 सितम्बर से 31 अक्टूबर तक स्वच्छ विद्यालय अभियान चलाया गया। केन्द्रीय विद्यालय तथा नवोदय विद्यालय संगठन के छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। इसमे निम्नलिखित गतिविधियां षामिल थी–

- ❑ स्कूल के बच्चे प्रतिदिन कक्षा में सफाई करें।
- ❑ बच्चे प्रयोगषाला, पुस्तकालय की सफाई करें।
- ❑ स्कूल में स्थित मूर्ति की सफाई करना।
- ❑ रसोईघर, पीने के पानी, शौचालय के आस–पास की सफाई करना।
- ❑ स्वच्छता पर आधारित विभिन्न प्रतियोगिता जैसे– निबंध, वाद–विवाद, चित्रकला का आयोजन करना।

इस अभियान के तहत छात्रों को सफाई के महत्व को बताते हुये उन्हे सफाई के लिये प्रेरित किया गया। वास्तव में स्वस्थ्य दिमाग तभी रहेगा जब तन स्वस्थ होगा। लोग इस बात को नही समझते

कि स्वच्छता के अभाव में अनेक बीमारियां होती है जिनसे उनकी आर्थिक स्थिति और अंततः देश की आर्थिक स्थिति खराब होती है।

हम अपने घर को साफ रखते हैं, अपने कपड़े को गंदा होने से बचाते हैं, महिलायें अपने रसोई घर और पूजा घर को विषेश रूप से साफ रखती हैं। लेकिन जब हम सार्वजनिक स्थान जैसे– पार्क, मंदिर, सरकारी कार्यालय, रेलवे स्टेषन, बस अड्डा आदि पर जाते हैं तो गंदगी करने में संकोच नहीं करते। रेलगाड़ी में मुंगफली, कागज, फलों के छिलके आदि गिरा देते हैं। एक ही आदमी का दो जगहों पर दो तरह का व्यवहार है। वास्तव मे गंदगी एक आदत की समस्या है। लोगों में सार्वजनिक उत्तरदायित्व के बोध का अभाव है। लोग जन्म–दिन, साल–गिरह, शादी–विवाह आदि समारोह में लाखों खर्च कर देते हैं लेकिन घर में शौचालय नहीं बनवाते। महिलाओं को घूंघट में रखने वाले लोग उन्हें खुलें मे शौच करने के लिये घर से बाहर भेज देते हैं। यहां पर धन की कमी की बात से अधिक षोच की कमी है।

जब स्वच्छता अभियान शुरू किया गया तो अनेक लोग विषेशकर विपक्षी दलों के नेताओं के द्वारा यह कहा गया कि 'स्वच्छता अभियान फोटों खिंचवाने के लिये (प्रचार हेतु) चलाया जा रहा है। परंतु धीरे–धीरे इसके सकारात्मक परिणाम दिखने लगे। किसी भी कार्यक्रम की सफलता के लिये माहौल बनाना आवश्यक होता है। इससे कोई इंकार नही कर सकता कि इस अभियान से सफाई के प्रति माहौल बना है। सरकार स्मार्ट शहर के साथ स्मार्ट गाँव बनाने की पहल कर रही है। शहरों तथा गाँवों में स्वच्छता के लिये सर्वेक्षण कराये गये। इससे शहरों तथा गाँवों में स्वच्छता के लिये प्रतिस्पर्धा (पुरस्कार प्राप्त करने के लिये) बढ़ी है। 15 फरवरी 2016 को जारी शहरो की स्वच्छता की रैकिंग में पहले 5 शहर थे–

- ❑ मैसूर (कर्नाटक)
- ❑ चंण्डीगढ़
- ❑ तिरूचिरापल्ली (तमिलनाडु)
- ❑ नई दिल्ली
- ❑ विशाखापट्टनम (आन्ध्र प्रदेश)

सूची में नीचे के 5 शहर

- ❑ कल्याण डोंबिवली (महाराश्ट्र)
- ❑ वाराणसी (उत्तर प्रदेश)
- ❑ जमशेदपुर (झारखण्ड)
- ❑ गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
- ❑ रायपुर (छत्तीसगढ़)

मई 2017 में स्वच्छ 5 शहरों की स्थिति इस प्रकार थी;

- ❑ इंदौर (मध्य प्रदेश)
- ❑ भोपाल (मध्य प्रदेश)

- ❑ विशाखापट्टनम
- ❑ सूरत
- ❑ तिरूचिरापल्ली

सूची में नीचे 5 के शहर

- ❑ गोंडा (उत्तर प्रदेश)
- ❑ भुसावल
- ❑ बगहा
- ❑ हरदोई
- ❑ कटिहार

मई–जून 2017 में भारतीय गुणवत्ता परिषद द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर 1,40,000 घरेलू सर्वेक्षण किए गए तथा यह पाया गया कि भारत में शौचालय का 91ः उपयोग किया जा रहा है। शौचालय पर आधारित फिल्म भी बन चुकी है। आजाादी के बाद दुल्हने यह शर्त रख रही हैं कि पहले शौचालय बनवाया जाय। स्वच्छ भारत अभियान के तहत न केवल सार्वजनिक स्थानों के पास सफाई की जा रही है बल्कि ठोस और तरल कचरे के प्रबन्धन/निपटारें पर ध्यान दिया जा रहा है।

गांधी जयंती के अवसर पर स्वच्छ भारत अभियान का शुभारम्भ सर्वथा उचित था क्योंकि स्वच्छता के ब्रान्ड अम्बेसडर तो गांधी ही थे। गांधी जी ने अपने जीवन–चर्या में साफ–सफाई को सर्वोच्च स्थान दिया। सुबह उठकर वह प्रतिदिन आश्रम की सफाई करते थे। वर्धा मे वह अपने शौचालय की स्वंय सफाई करते थे। गांधी ने षौचालय का इस्तेमाल कर लोगों मे यह संदेश दिया कि शौचालय की जरूरत प्रत्येक घर को है अर्थात गांधी खुले में शौच के विरोधी थे। गांधी आजादी की लड़ाई के साथ–साथ भारतीयों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करते रहे या यू कहें कि उन्होंने स्वच्छता अभियान चला रखा था। वे भारतीयों की स्वच्छता के प्रति उदासीनता को जान चुके थे। गांधी जी जब बनारस हिंदू विष्वविद्यालय के उद्घाटन के अवसर पर बोल रहे थे तो बनारस जैसे पवित्र षहर की धार्मिक गंदगी का उल्लेख किया। विषेश रूप से विश्वनाथ मंदिर के आस–पास का। इसी प्रकार जब वे तिलक से मिलने गये थे तो जहां ठहरे थे वहां की सफाई स्वंय की। उन्हें यह देखकर बहुत दुःख हुआ कि लोग गंदगी में रहते हैं लेकिन सफाई नही करते। सफाई को एक जाति विशेष से जोड़कर देखते हैं। उन्होंने धार्मिक अनुश्ठान के नाम पर नदियों, जलाशयों को गंदा करने के लिये लोगो की आलोचना की। सार्वजनिक स्थानों जैसे रेलवे स्टेशन, बस अड्डे, बाजार और मन्दिरों में मच्छर, मक्खी और चूहों की उपस्थिति देखकर उसे बदबूदार 'मांद' कहा। नवाखली यात्रा के दौरान गांधी जी ने सूखी पत्तियों से रास्ते मे षरारती तत्वों द्वारा रखे गये मल को हटाया। यह देखकर जब उनके साथ चल रही मनु ने कहा आप हमे शर्मिंदा क्यों कर रहे है तब गांधी ने कहा कि उन्हे इस काम मे असीम आनंद आता है। गांधी ने 20 मार्च 1916 को गुरूकुल कांगड़ी मे दिये गये भाशण मे कहा कि गुरूकुल में बच्चों के लिये स्वच्छता और

सफाई के नियमों के साथ उसके प्रषिक्षण की भी व्यवस्था होनी चाहिए। गांधी द्वारा स्थापित गुजरात विद्यापीठ में शिक्षकों, छात्रों और स्वंय सेवको को स्वच्छता के कार्य में लगाया जाता था। गांधी जी ने कांग्रेस के सभी अधिवेशनो में स्वच्छता का मुद्दा उठाया। उनके द्वारा लिखे रचनात्मक कार्यक्रम मे भी स्वच्छता पर बल है। गांधी के ग्राम स्वराज्य में अस्वच्छता/ गंदगी के लिये कोई स्थान नहीं था। उन्होनें तो यहां तक लिखा है कि ''गाँव के बाहर और आस–पास इतनी गंदगी होती है और वहां इतनी बदबू आती है कि अक्सर गाँव में जाने वाले को आँख मूदकर और नाक दबाकर जाना पड़ता है।''

गांधी केवल अस्वच्छता पर चिंता प्रकट नही करते थे, भाशण नहीं देते थे बल्कि इस समस्या के हल का सरल उपाय भी बताया। उन्होंने कहा कि ''सब प्रकार का कूड़ा–करकट हटाकर स्वच्छ बना लेना चाहिए फिर उस कूड़े का वर्गीकरण कर देना चाहिए। इसमें से कुछ का तो खाद बनाया जा सकता है कुछ को सिर्फ जमीन में गाड़ देना भर काफी होगा और कुछ हिस्सा ऐसा होगा कि जो सीधा सम्पत्ति के रूप में परिणत किया जा सकेगा। वहां मिली हुई प्रत्येक हड्डी एक बहुमूल्य कच्चा माल होगी, जिससे बहुत सी उपयोगी चींजे बनाई जा सकेंगी, पीसकर कीमती खाद बनाया जा सकेगा। फटे–पुराने चिथड़ों तथा रद्दी कागजों से कागज बनाये जा सकते हैं और इधर–उधर से इकट्ठा किया हुआ मल–मूत्र गाँव के खेतों के लिए सुनहरे खाद का काम देगा।''

गांधी जी भारत आने के पूर्व दक्षिण अफ्रीका में भी भारतीयों में स्वच्छता की अलख जगाने का काम किया। उन्होंने व्यापारियों से तथा मजदूरों से सफाई से रहने तथा अपने काम की जगह को साफ रखने के लिये कहा। जब भारतीय मूल के लोगों को गंदा कहा गया तो गांधी ने इसका प्रतिकार किया। उन्होंने कहा इसके लिये भारतीय नहीं बल्कि अस्वस्थकारक परिस्थितियां जिम्मेदार हैं उन्हें ढ़ाँचागत सुविधाएं मुहैया नही कराई गई हैं इसके लिये नगरपालिका दोषी है। दक्षिण अफ्रीका में जब प्लेग फैला तो उन्होंने पूरी लगन के साथ लोगों की सेवा की तथा लोगों से कहा इस घटना से सबक लेना चाहिए, हमे अपने आस–पास गंदगी नहीं रहने देना चाहिए।

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वच्छ भारत अभियान में षहरों के लिये स्वच्छता अभियान, गाँवों के लिये स्वच्छता अभियान तथा विद्यालय स्वच्छता पर जो बल दिया जा रहा हैं, गांधी जैसा युग द्रश्टा बहुत पहले ही इस समस्या को जानकर इसके समाधान का प्रयास किया। गांधी अपने जीवन काल मे ही भारत को गुलामी की जंजीरो से मुक्त करा दिए परंतु स्वच्छता की इनकी लड़ाई अधूरी रही। भारतीय प्रधानमंत्री नरेद्र मोदी गाँधी की अधूरी लड़ाई को आगे बढ़ा रहे हैं। हम सभी देष वासियों को गांधी के सपने को पूरा करने के लिये सरकार का सहयोग करना चाहिए। यह गांधी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सन्दर्भ

मोहन दास करम चन्द गांधी, सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा, अनुवादक काशीनाथ त्रिवेदी, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1957 पुनर्मुद्रण 1993,

ग्राम स्वराज्य, महात्मा गांधी, हरिप्रसाद व्यास, नवजीवन ट्रस्ट प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद (1963), पुनर्मुद्रण 2007

गांधी जी, रचनात्मक कार्यक्रम, नवजीवन प्रकाष

कुरूक्षेत्र, अक्टूबर 2016, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली

वहीं, अक्टूबर 2015

योजना अक्टूबर 2017, सूचना भवन, सी0जी0ओ0 परिसर, नई दिल्ली

गांधी चिन्तन, संपादक, डा अर्जुन मिश्र, त्रिशूल बुक सर्विस नई दिल्ली 2017

India water portal, sanitation.indiawaterportal.org

www.hindiessaypedia.com

प्रो0 टी0 वी0 कट्टीमनी, इं0गां0 राष्ट्रीय जनजाति विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्यप्रदेश